मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित पारिवारिक बोध

प्रिनसी पी ए
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
अण्णामलै विश्वविद्यालय,
अण्णामलै नगर - 608 002.

डॉ. एल.तिल्लै सेल्वी,
आचार्यो,
हिन्दी विभाग,
अण्णामलै विश्वविद्यालय,
अण्णामलै नगर - 608 002

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित पारिवारिक बोध

आमुख

मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील लेखिका हैं, जिन्होंने अपने लेखन में समाज, परिवार और स्त्री मनोविज्ञान के कई गहरे पहलुओं को उकेरा है। उनके लेखन में परिवार का चित्रण कई रूपों में उभरता है। मृदुला गर्ग की कहानियाँ परिवार की जटिलताओं और संबंधों की गहराई को बारीकी से प्रस्तुत करती हैं। कई बार परिवार एक ऐसी इकाई के रूप में सामने आता है जिसे पात्र खोजने की कोशिश करते हैं, या वे उसके असली स्वरूप की तलाश में भटकते रहते हैं। दूसरी कहानियों में परिवार की उपस्थिति बहुत स्पष्ट और सशक्त होती है, जहाँ वह पात्रों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है । मृदुला गर्ग का योगदान आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी दृष्टिकोण और परिवार के यथार्थवादी चित्रण के लिए अद्‌वितीय है।

मृदुला गर्ग की कहानियों में पारिवारिक बोध

मृदुला गर्ग की कहानी “अवकाश” में परिवार और स्त्री की भूमिका का जो चित्रण मिलता है, वह भारतीय समाज और पारिवारिक संरचना के पारंपरिक ढांचे को चुनौती देता है। यह कहानी एकल परिवार, पति-पत्नी और उनके संबंधों के बदलते स्वरूप की कथा है, जो परंपराओं से मुक्त होकर आत्मान्वेषण और स्वतंत्रता की दिशा में बढ़ती है । पत्नी का अपने

पति से समीर के प्रति प्रेम और तलाक़ की इच्छा सीधे तौर पर व्यक्त करना, भारतीय पारिवारिक व्यवस्था की परंपराओं और सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देता है। यह कहानी पारंपरिक "पतिव्रता" स्त्री के आदर्श को अस्वीकार करती है और एक ऐसी स्त्री को प्रस्तुत करती है, जो अपने मनोभावों और इच्छाओं को व्यक्त करने में संकोच नहीं करती। पत्नी अपने प्यार और निर्णय को लेकर स्पष्ट और दृढ़ है। वह अपराधबोध से मुक्त है और किसी भी सामाजिक या पारंपरिक बंधनों को स्वीकार नहीं करती। यह नई स्त्री का रूप है, जो अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है और अपनी भावनाओं के प्रति ईमानदार रहती है। महेश, पति होने के बावजूद, क्रोध और ईर्ष्या से ग्रसित नहीं होता। यह दर्शाता है कि आधुनिक परिवारों में पारंपरिक पति-पत्नी के रिश्ते में भी संवाद और समझदारी की जगह बन रही है। हालांकि, महेश की सहनशीलता और शांतिपूर्ण स्वभाव को कई पाठक पारंपरिक भारतीय मर्दानगी के विपरीत देख सकते हैं।

यह कहानी एक ऐसे परिवार को दर्शाती है जो न तो परंपराओं में बंधा है, न ही सामाजिक मान्यताओं से नियंत्रित। परिवार का यह स्वरूप बदलते समय के साथ उभर रहा है, जहाँ रिश्ते प्रेम, समानता और स्वतंत्रता पर आधारित होते हैं। कहानी में पत्नी का यह कहना कि "मैं मर चुकी हूँ और दोबारा जन्म लिया है," 1 यह दिखाता है कि वह अपने पुराने संबंधों से अलग होकर एक नई शुरुआत करना चाहती है। "सात जन्मों के बंधन" और "डोली-अर्थी" जैसी पारंपरिक अवधारणाओं को यह कहानी पूरी तरह अस्वीकार करती है। यह कहानी भारतीय स्त्री के नए रूप को दिखाती है, जो अपनी इच्छाओं और भावनाओं को प्राथमिकता देती है। वह समाज के नियम-क़ानून और नैतिक मान्यताओं से परे, अपनी शर्तों पर जीवन जीने का साहस करती है। यह बदलाव न केवल परिवार की परिभाषा को नया आकार देता है, बल्कि समाज के दृष्टिकोण को भी चुनौती देता है।

मृदुला गर्ग की कहानी "मेरा" एकल परिवार के बदलते स्वरूप और स्त्री की स्वतंत्रता का एक सशक्त चित्रण है। यह कहानी पति-पत्नी के रिश्ते, उनकी इच्छाओं और समाज में स्त्री की भूमिका के बीच टकराव को सामने लाती है। यह कहानी मीता और महेंद्र के वैवाहिक जीवन के माध्यम से महत्वाकांक्षा, मातृत्व, स्वतंत्रता, और स्त्री के आत्मनिर्णय जैसे विषयों को उजागर करती है।

महेंद्र, एक महत्वाकांक्षी और अपने करियर को प्राथमिकता देने वाला व्यक्ति है, जबकि मीता मातृत्व को प्राथमिकता देती है। महेंद्र के लिए बच्चा उसकी योजनाओं में बाधा

है, जबकि मीता के लिए यह उसके जीवन का हिस्सा है। इस असहमति से दोनों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है।

स्त्री की स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय यह भाव मीता में हमें देख सकती है। मीता का अपने बच्चे को जन्म देने का निर्णय इस बात का प्रतीक है कि अब स्त्रियाँ अपने जीवन के महत्वपूर्ण फैसलों में आत्मनिर्भर और आत्मनिर्णयी हो रही हैं। वह पति की इच्छाओं के विपरीत जाकर अपने मातृत्व के अधिकार को अपनाती है।

कहानी में पारंपरिक "पति-पत्नी" के रिश्ते से परे, एकल परिवार के भीतर व्यक्तियों की स्वतंत्रता और अलग-अलग विचारों की स्वीकृति को दिखाया गया है। यह परिवार न तो पारंपरिक है, न ही पूरी तरह आधुनिक, बल्कि एक संक्रमणशील स्वरूप को दर्शाता है।

मीता केवल अपने बच्चे के लिए नहीं लड़ती, बल्कि अपने आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए भी खड़ी होती है। जब वह महेंद्र को "नपुंसक" कहती है, तो यह उसकी भावनात्मक पीड़ा और पति की संवेदनहीनता के प्रति उसकी तीव्र प्रतिक्रिया का प्रतीक है।

मीता आधुनिक भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने जीवन को पारंपरिक मान्यताओं के बंधनों में सीमित नहीं रखना चाहती। वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र है और अपने बच्चे का पालन-पोषण स्वयं करने का साहस रखती है। यह कहानी इस बात को रेखांकित करती है कि स्त्रियाँ अब पति या परिवार पर निर्भर नहीं रह गई हैं, बल्कि अपने अधिकारों और सपनों के लिए लड़ने को तैयार हैं। महेंद्र का यह सोचना कि बच्चा केवल "अड़ंगा" है, दिखाता है कि महत्वाकांक्षा के चलते परिवार के प्रति संवेदनशीलता कम हो सकती है।

डॉक्टर का यह कहना कि "गर्भ रखना या गिराना स्त्री का "निजी मामला" है"2, भारतीय समाज में स्त्रियों के अधिकारों और उनके शरीर पर उनके स्वामित्व को स्वीकारने की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है।

मृदुला गर्ग की कहानी "मंजूर-नामंजूर" पारिवारिक संबंधों, बहनों के आपसी समीकरण, और मध्यमवर्गीय परिवारों के सहज जीवन का खूबसूरत चित्रण है। इस कहानी में पारिवारिक संरचना के भीतर व्यक्तित्व, इच्छाएँ, और आपसी समझ को गहराई से दर्शाया गया है। यह कहानी दो बहनों, मंजूर और नामंजूर, के माध्यम से पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं और मध्यमवर्गीय परिवारों में मौजूद गर्मजोशी और संघर्षों को प्रस्तुत करती है। कहानी एक छोटे से घर में रहने वाले बड़े परिवार की तस्वीर खींचती है। यह परिवार मध्यमवर्गीय है, जहाँ संसाधनों की कमी

है, लेकिन भावनाओं और संबंधों की कोई कमी नहीं। घर में माँ-बाप, चाचा-चाची, बच्चे, स्थायी मेहमान और रैन बसेरा करने वाले मुसाफिर–सभी के बीच सह-अस्तित्व की भावना है। यह परिवार भारतीय समाज की उस परंपरा को दर्शाता है, जहाँ सीमित जगह और संसाधनों के बावजूद सभी मिल-जुलकर रहते हैं।

मंजूर और नामंजूर के रिश्ते में गहरी आत्मीयता और सहजता है। दोनों का एक ही तारीख़ को जन्मदिन होना और उन्हें "जुड़वाँ" मान लेना, "जुड़वाँ होने न होने से क्या फर्क पडता है।"3 उनके बीच बराबरी और करीबी को दर्शाता है। मंजूर का मिलनसार और मैत्रीप्रिय स्वभाव, और नामंजूर की सरलता व हास्यबोध, दोनों के व्यक्तित्व को अलग बनाते हैं। बहन के गुस्से में चाँटा मारने और फिर हँसी-मज़ाक में उसे भुला देना, रिश्तों की सहजता और सहनशीलता का उदाहरण है। मंजूर का व्यक्तित्व ऐसा है वो एक आत्मविश्वासी और मैत्रीप्रिय महिला है। वह विवाह के बाद भी अपने दोस्तों और सामाजिक जीवन को महत्व देती है। उसका परिवार आधुनिक सोच का परिचय देता है, जहाँ उसकी स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया है।

मंजूर के परिवार की परंपरागत जड़ें होने के बावजूद उसकी आधुनिक सोच और व्यवहार को सहजता से अपनाया गया है। यह भारतीय समाज में बदलाव और नई सोच के प्रवेश का संकेत है। पारिवारिक सहजता इस कहानी में देख सकता है कहानी मध्यमवर्गीय परिवारों में मौजूद सामूहिक जीवन और सह-अस्तित्व की भावना को उजागर करती है। मंजूर और नामंजूर के रिश्ते में मौजूद सहनशीलता और अपनापन, पारिवारिक रिश्तों की गहराई को दर्शाता है। और इस कहानी में मंजूर का अपनी पसंद और सामाजिक जीवन को बनाए रखना, स्त्री के बदलते स्वरूप और उसकी स्वतंत्रता को दर्शाता है।

वह मैं ही थी मृदुला गर्ग का ओर एक कहानी है। यह कहानी भारतीय समाज में स्त्री के मनोविज्ञान, पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक मान्यताओं के बीच स्त्री की भावनात्मक स्थिति को दर्शाती है। कहानी का मूल आधार एक गर्भवती स्त्री, उमा, और उसकी मानसिक स्थिति है, जो एक अनजाने भय और असुरक्षा से जूझ रही है। यह कहानी एक स्त्री की मानसिक और भावनात्मक यात्रा है, जो उसके भय, असुरक्षा, और समाज द्वारा थोपी गई मान्यताओं के इर्द-गिर्द घूमती है।

उमा और उसका पति बड़े शहर से क़स्बे में स्थानांतरित हुए हैं। नई जगह पर आते ही उमा को अजनबीपन और असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। जिस घर में वे

आए हैं, वहाँ की भयावह कहानी उसे मानसिक रूप से परेशान कर देती है। जिस पलंग पर पहले की गर्भवती स्त्री की मृत्यु हुई थी, वह पलंग भय का प्रतीक बन जाता है। उमा का उस पर सोने से इंकार उसकी गहरी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया है, जो उसकी असुरक्षा और भय को उजागर करता है। उमा की सासु माँ और पति उसके डर को तवज्जो नहीं देते। यह पारंपरिक भारतीय समाज की मानसिकता को दर्शाता है, जहाँ स्त्री के भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। पड़ोस की स्त्रियाँ पहले की गर्भवती स्त्री की कहानी सुनाकर उमा के डर को और गहरा कर देती हैं। उनकी बातें उमा के भय को वास्तविक बना देती हैं, जिससे वह मानसिक संघर्ष में फँस जाती है। पड़ोस की स्त्रियाँ यह भी बताती हैं कि उस मृतक स्त्री का पति जल्दी से दूसरा विवाह कर चुका है। यह बात उमा के भीतर गहरी बेचैनी पैदा करती है। वह अपने पति को उस पुरुष की जगह और खुद को मृतक स्त्री की जगह रखकर देखती है, जो उसके भीतर अविश्वास और असुरक्षा का भाव पैदा करता है।

उमा का पति है मनीष, उमा अपने पति से अपना डर कहती है तो वह टाल जाता है । वह उस पलंग को भी बदलने का पत्नी का आग्रह नहीं मानता, जिससे उसकी पत्नी भयभीत है । वह साफ़ - साफ़ कह देता है कि “कोई एक औरत बच्चा जनते इस घर में मर गई तो इसका यह मतलब नहीं कि सब मरेंगी । औरतों को तो बात से बात निकालने का चस्का होता है । मेरे पास इतना वक्त कहाँ है ? अभी तबादला हुआ है नया काम समझने निपटाने के बाद बिस्तर पर लेटता हूँ तो बदन चस-चस कर रहा होता है । मुझे तो साँस लेने में भी कोई तकलीफ़ नहीं होती, ना किसी औरत का भूत मुझे सताता है । बढ़िया आरामदेह पलंग है । टीसते बदन को सुख मिलता है । गहरे सोऊँ नहीं तो अगले दिन काम कैसे करूँ ?”4 कभी - कभी पत्नी उसे झकझोर कर जगा देती । कहती, “दम घुट रहा है मेरा ।” एक गर्भवती पत्नी की कितनी अनदेखी करता है पति मनीश वह कहता है, ‘बेवक़ूफ़ी की बात मत करो’5 , इस तरह कहता है अपने गर्भवती पत्नी के बारे में और उसकी चिन्ताओं के बारे में वो मानते भी नहीं । “उमा ने एक लड़की को जन्म दिया। उसे रक्तस्राव हो गया, और डॉक्टर ने अस्पताल में जाने को कहा। उमा क्षीणित थी, फिर भी वह कहती है, ‘मैं मरना नहीं, जीना चाहती हूं।6

निष्कर्ष

मृदुला गर्ग की अवकाश कहानी परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष को दर्शाती है। यह भारतीय समाज में परिवार और स्त्री की भूमिका पर एक गहन दृष्टि डालती है और यह स्पष्ट करती है कि बदलते समय के साथ, रिश्तों और परिवार की परिभाषा भी बदल रही है।

"अवकाश" एक ऐसी कथा है जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है कि क्या वाकई प्रेम, स्वतंत्रता और ईमानदारी से भरा यह नया स्वरूप भारतीय परिवारों के भविष्य का संकेत है।

मृदुला गर्ग की "मेरा" परिवार, स्त्री की स्वतंत्रता और मातृत्व जैसे विषयों को संवेदनशीलता और प्रगतिशीलता के साथ प्रस्तुत करती है। यह कहानी न केवल परिवारों के बदलते स्वरूप को दिखाती है, बल्कि यह भी बताती है कि अब स्त्रियाँ अपने फैसलों के लिए स्वतंत्र हैं और किसी भी सामाजिक दबाव या पारंपरिक नियम-कानून से बंधी नहीं हैं। मीता का दृढ़ निश्चय और साहस इस बात का प्रतीक है कि नई पीढ़ी की स्त्रियाँ अपने सपनों और अधिकारों के लिए खड़ी हो सकती हैं। मंजूर-नामंजूर" मृदुला गर्ग की एक संवेदनशील कहानी है, जो पारिवारिक जीवन, बहनों के रिश्ते, और समाज में बदलते मूल्यों को खूबसूरती से पेश करती है। यह कहानी दिखाती है कि पारंपरिक परिवारों में भी सहनशीलता, अपनापन, और आधुनिकता के लिए जगह हो सकती है। मंजूर और नामंजूर के माध्यम से यह कथा पारिवारिक रिश्तों की गहराई और जटिलताओं का सजीव चित्रण करती है।

मृदुला गर्ग की कहानी "वह मैं ही थी" एक स्त्री के अस्तित्व और पहचान की खोज की कहानी है। यह न केवल व्यक्तिगत आत्ममंथन की बात करती है, बल्कि सामाजिक मान्यताओं और स्त्री की स्थिति पर भी सवाल उठाती है। कहानी का नायक महसूस करता है कि अपनी असफलताओं, कमजोरियों और अनुभवों के बावजूद, उसकी पहचान अद्‌वितीय है। यह कहानी हर पाठक को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मृदुला गर्ग सम्पूर्ण कहानियाँ(अवकाश) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ.45
2. मृदुला गर्ग सम्पूर्ण कहानियाँ(मेरा) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ. 199
3. मृदुला गर्ग सम्पूर्ण कहानियाँ(मंजूर नाम मंजूर) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ. 606
4. मृदुला गर्ग सम्पूर्ण कहानियाँ(वह मैं ही थी) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ. 444
5. वही पृ.445
6. वही पृ.448

.